National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(8): 28-29
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com

परषोतम कुमार
असिस्टेंट प्रोफैसर,
हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू -180006

Correspondence:
परषोतम कुमार
असिस्टेंट प्रोफैसर,
हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू -180006

"गोदान" शीर्षक की सार्थकता

परषोतम कुमार

प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'गोदान' उपन्यास सन् 1936 ई. में प्रकाशित हिन्दी साहित्य की कालजयी रचना है। 'गोदान' केवल हिन्दी साहित्य ही नहीं बल्कि भारतीय साहित्य के साथ-साथ विश्व साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं में विशेष स्थान रखता है। गोदान यथार्थवादी उपन्यास है। इसमें ग्रामीण जीवन की सहजता, स्वाभाविकता को समग्रता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। ग्रामीण जीवन अपनी सम्पूर्ण गतिविधियों, क्रियाकलापों के साथ चित्रित है। आलोच्य उपन्यास में प्रेमचन्द ने स्वाधीनता पूर्व कृषि से जुड़े भारतीय किसान की संघर्शमयी जीवन गाथा का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। उपन्यास का नायक होरी सम्पूर्ण भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है।

गोदान के शीर्षक की सार्थकता पर आलोचकों ने अपने-अपने ढंग से विचार किया है। उपन्यास की कथावस्तु किसान जीवन से जुड़े होने के कारण कुछ लोग 'गोदान' शीर्षक को भ्रामक मानते हैं। कथा के आधार पर उपन्यास का शीर्षक 'किसान' भी हो सकता था। 'किसान' शिर्षक से उपन्यास का नाट्य रूपान्तरण भी हुआ है। उपन्यास का शिर्षक 'गोदान' पूर्ण रूपेण यथार्थवादी है। गाय ही सम्पूर्ण कथा का केन्द्र बिन्दू है। कथा का आरम्भ गाय से होता है उसका विकास गाय के माध्यम से होता है और अन्त भी गोदान प्रसंग पर होता है। होरी उपन्यास का नायक है और उसमें गाय खरीदने की प्रबल इच्छा आरम्भ से अन्त तक बनी रहती है। अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए वह जीवन पर्यन्त संघर्श करता है। कथा के आरम्भ में ही होरी गाय की साध लिए दिखाई देता है। वह मन ही मन सोचता है "भगवान, कहीं गौ से बरखा कर दें और डांडी भी सुभीते से रहे, तो एक गाय जरूर लेगा।... उसकी खूब सेवा करेगा। कुछ नहीं तो चार-पाँच सेर दूध होगा। गोबर दूध के लिए तरस तरसकर रह जाता है। बछबे भी अच्छे बैल निकलेंगे। दो सौ से कम की गोई न होगी। फिर गऊ से ही द्वार की सोभा है। सबेरे-सबेरे गऊ के दर्शन हो जाएं तो क्या कहना। न जाने कब यह साध पूरी होगी, कब यह शुभ दिन आएगा।"[1]

गाय की साध से होरी का जीवन संग्राम शुरू होता है। होरी पहले गोबर के लिए तथा उसके पश्चात् उसके बेटे मंगल के दूध के लिए गाय खरीदने के लिए जी तोड़ मेहनत करता है। होरी के लिए गाय केवल आर्थिक समृद्धि का साधन नहीं बल्कि प्रतिष्ठा का भी प्रतीक है। गाय उसके लिए भक्ति और श्रद्धा की वस्तु ही नहीं बल्कि सजीव सम्पत्ति थी। वह सोचता है गाय को द्वार पर बँधी देखकर लोग पूछेगें यह किसका घर है? होरी महतो का। होरी भोला से उधारी पर गाय घर लाता है और यहीं से उसकी परेशानियों का आरम्भ होता है। जब वह गाय लाता है तो पूरा गाँव उससे ईर्श्या करने लगता है। यहाँ तक कि उसका छोटा भाई हीरा भी सोचता है कि भाई ने पैसे दबाकर रखे हैं। जब साथ थे तो कभी निकाले नहीं और आज बंटवारे के बाद उसी पैसे से गाय लाया है। इसी ईर्श्या के कारण हीरा गाय को जहर देकर मार डालता है। गाय के पैसे न चुकाए जाने पर भोला होरी के दोनों बैल अपने घर ले जाता है। हीरा द्वारा गाय को जहर देने पर गाँव में पुलिस आती है और हीरा के घर की तलाशी लेना चाहती है। पुलिस द्वारा घार की तलाशी को परिवार की मर्यादा के विरूद्ध मानते हुए होरी भाई को बचाने के लिए दारोगा गण्डा सिंह को 30 रुपए देने के लिए तैयार हो जाता है।

गाय के कारण ही गोबर बिरादरी के बाहर की झुनिया के प्रेम पाश में बँधता है। जब वह भूसे के लिए जाता है तो भोला की बेटी झुनिया से उसका मिलन होता है। यहाँ से वह एक-दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। झुनिया गर्भवती हो जाती है और अपने घर से भागकर गोबर के घर आ जाती है।

घर से भागी झुनिया को होरी बहु रूप में स्वीकार कर अपने घर में रख लेता है। भोला इसका विरोध करता है। अतः पंचायत बुलाई जाती है। झुनिया को घर रखने पर पंचायत होरी पर डांड लगाती है जिसके चलते उसका घर और अनाज दोनों ही हाथ से निकल जाते है। घर में गाय आने से परिवार के सभी सदस्यों का गाय के साथ भावात्मक लगाव हो जाता है। गाय परिवार का अभिन्न अंग बन गई थी। गाय के आने पर धनिया के मुख पर भी जवानी चमक उठती है। घर में गाय की ही चर्चा रहती है। गाय के साथ उसकी दोनों बेटियाँ सोना और रूपा जुड़ी हैं। गाँव का साहूकार झिंगुरी सिंह होरी को उधार दिए गए पैसों के बदले उसकी गाय को हथियाना चाहता है। होरी भी इसके लिए तैयार हो जाता है। बेटियाँ झिंगुरी के हाथों गाय बेचने पर होरी का कड़ा विरोध करती हैं। सोना ने तो यहाँ तक कह डाला "इससे तो कहीं अच्छा है मुझे बेच डालो। गाय से कुछ बेसी ही मिल जायेगी।"[2] छोटी बेटी रूपा विवाह के पश्चात् भी पिता की लालसा को नहीं भुला पाती है। "वह जानती थी आज भी वह लालसा होरी के मीन में उतनी ही सजग है। अबकी वह जायगी, तो साथ वह घौरी गाय जरूर लेती जायेगी।"[3] वह अपने पति राम सेवक से कहकर एक अहीर के हाथ होरी के घर गाय भेजवाती है। परन्तु विडम्बना यह है कि गाय पहुँचने से पहले ही होरी की मृत्यु हो जाती है।

गाय ही ग्रामीण कथा को नगरीय कथा से जोड़ती है। गाय के कारण ही झुनिया से गोबर का सम्बन्ध हुआ। फिर डरकर वह लखनऊ भाग जाता है और शहरी पात्रों के सम्पर्क में आता है। वहाँ रहकर कुछ पैसे भी कमाता है और शहरी लोगों के सम्पर्क में आकर उसमें चेतना भी जागृत होती है। इसी चेतना के चलते वे गाँव में शोषकों का विरोध करता है। शहर जाने पर होरी का सपना गोबर की आँखों में भी पलता है। जिसे वे दूसरी बार षहर जाने से पहले देखता है "सबसे पहले वह एक पछाई गाय लाएगा जो चार पाँच सेर दूध देगी और दादा से कहेगा, तुम गऊ माता की सेवा करो। इससे तुम्हारा लोक भी बनेगा, परलोक भी।"[4] गाय की कीमत न चुकाने के कारण जब भोला होरी से बैल ले जाता है तो इसका फायदा उठाकर पण्डित दातादीन होरी से सपरिवार अपने खेतों में मजदूरी करवाता है। होरी की मृत्यु गाय खरीदने के लिए हाड़-तोड़ मेहनत के कारण होती है। गाय के लिए वे सड़क मजदूरी करता है। आठ आने मजदूरी पर दिन भर लू और कड़कती धूप में कांकड़ तोड़ने का काम करता है। शीघ्र-अति-शीघ्र गाय खरीदने की लालसा में रात को भी खाना खाकर डिब्बी के सामने बैठकर देर रात तक डिब्बी के सामने बैठकर सुतली कातता रहता था। गाय का सपना होरी अन्त तक देखता है और मृतशय्या पर भी गाय-गाय चिल्लाता है, पास बैठी धनिया को गोबर समझकर कहता है "तुम आ गए गोबर? मैंने मंगल के लिए गाय ले ली। वह खड़ी है, देखो।"[5] मृत्यु के समय उसे प्रतीत होता है कि उसकी इच्छा पूरी हो गयी है। उसे गाय का चित्र दिखाई देता है, बिल्कुल कामधेनु सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था। वस्तुतः गाय कथा के नस-नस में रची बसी है। कमजोर शरीर और जी-तोड़ मेहनत के कारण ही उसकी असामियक मृत्यु होती है। अतः उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक एवं घटनाओं का बीजतत्व गाय ही है। गाय के इर्द-गिर्द ही पूरा कथानक घूमता है और होरी का जीवन संघर्ष भी। अंततः होरी स्वयं गाय का प्रतीक बनकर उभरता है। एक ऐसी गाय जिसे जितना भी दूहो पर वह पूँछ नहीं उठाती है। होरी भी अपने शोषकों का कभी विरोध नहीं कर पाता। गाय का बिम्ब ही समस्त कथानक, घटनाओं, प्रसंगों, पात्रों के चरित्र-चित्रण में बीज रूप में उपस्थित है। विडम्बना यह है कि होरी की मृत्यु पर पण्डित धनिया से उसका गोदान करने के लिए कहता है। एक किसान जो जीवन पर्यन्त गाय की साध के लिए संघर्श करता है जिसमें उसकी मृत्यु हो जाती है और यह रूढ़िवादी समाज उससे गोदान की अपेक्षा करता है। जीवन भर उसका शोषण करने के पश्चात् भी यह प्रक्रिया उसका पीछा नहीं छोड़ती। अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण के आधार पर ही प्रेमचन्द भारतीय कृशक जीवन में गाय की वास्तविक भूमिका का यथार्थ चित्रांकन कर पाए हैं। होरी की त्रासदी के माध्यम से लेखक ने हिन्दू धर्म के खोखलेपन को, उसके लोक-विरोधी चरित्र को भी उजागर किया है।

प्रेमचन्द गोदान प्रसंग में दिखाते हैं कि यह 'गोदान' परमपरा कितनी रूढ़िवादी एवं खोखली है फिर भी मनुष्य उससे चिपका हुआ है। मृत्यु के समय गोदान करवाना कितना जरूरी है। धर्म के ठेकेदारों ने इसे लूट का हथियार बना दिया है। वर्तमान में यदि इस परम्परा में कोई बदलाव आया है तो बस इतना ही कि अब यह प्रतीकात्मक हो गया है। गाय नहीं तो इसके प्रतीकात्मक रूप में कुछ भी किन्तु इस बोझ का ढोना आवश्यक है। मृत्युशय्या पर पड़े होरी से गोदान करवाने को कहा जाता है तो धनिया उन बीस आनों से गोदान करवाती है जिनसे वह अपनी अन्तिम इच्छा पूरी करना चाहता था। यह बीस आने को अगर उसकी आकांक्षित इच्छा की मूर्त गाय के सापेक्ष रखकर देखें तो होरी के जीवन की मार्मिकता और भी गहरी हो जाती है। एक तरफ होरी के संघर्षमय जटिल जीवन की गाथा है तो दूसरी तरफ प्रेमचन्द के आदर्शवादी दृष्टिकोण के प्रति उदासीनता का भाव। आलोचक विजय देवनारायण साही ने 'गोदान' नामक समीक्षात्मक लेख में उपन्यास के शीर्षक पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। उनका मानना है कि "उपन्यास का नाम 'गोदान' कुछ भ्रामक सा है। अनावश्यक रूप से हमारा ध्यान केवल एक घटना की ओर केन्द्रित हो जाता है, जो सारे उपन्यास का एक अंश है और शायद छोटा सा अंग है।"[6] परन्तु उपर्युक्त विवेचन से स्पश्ट होता है कि जिन युगीन परिस्थितियों को प्रेमचन्द दिखाना चाहते थे तथा भारतीय मानस की जिन भावनाओं, विचारों, अनुभवों को सम्प्रेक्षित करना चाहते थे 'गोदान' शीर्षक उनकी सशक्त अभिव्यक्ति है। अतः उपन्यास का शीर्षक पूर्णतः यथार्थ के अनुकूल है जो पूरी कथा पर छाया रहता है।

सन्दर्भ :-

1. प्रेमचन्द, गोदान, पृ. 8
2. वही, पृ. 87
3. वही, पृ. 296
4. वही, पृ. 113
5. वही, पृ. 299
6. विजयदेव नारायण साही, गोदान, गोदान का महत्व, सं. सत्यप्रकाश मिश्र, पृ. 09